उपसंहार

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य मानव की हर भावना, विचारों को प्रतिबिंबित करता है। समाज की विचारधारा साहित्य प्रकट करता है। समाज व्यक्तियों से बनता है। समाज में एकत्रित आये व्यक्ति भिन्न, धर्म, जाति, पंथ, देश आदि से होते है। इन सब की अपनी अपनी विचारधारा होती। संस्कृति अलग होती है। भाषा अलग होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण वह हमेशा अपने समुह के साथ रहता है। वह अकेला नहीं रहता। साहित्य इन सभी की झाँकी प्रस्तुत करता है। साहित्यकार इन विविध व्यक्तिसमुहों का चित्रण अपने साहित्य में करता है जिससे उन व्यक्तियों को समझा जा सकें।

साहित्य का निर्माण नाटक, काव्य, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक विधाओं से होता है। इन सभी साहित्य विधाओ का विषय मानव ही रहा है। साहित्य मानव-मन की सृजनता का ही फल है। साहित्य मानव की हर इच्छा, आकांक्षा, विचारें को ही सादर करता है। तत्कालीन विचारधाराओं के कारण मनुष्य की बदलती परिस्थिति, मानसिकता साहित्य के आधार पर देखी जा सकती है। समाज में आये हर परिवर्तन साहित्य में भी आये है। युगानुकूल परिस्थितियों के बदलाव के साथ साहित्य में भी परिवर्तन आये हैं।

प्रेमचन्दयुगीन साहित्य में देहातों के वर्णन के साथ पारिवारिक जीवन पर ही अधिक जोर था। इसके पश्चात साहित्य का क्षेत्र विस्तारित होता गया। साहित्य में नवीन कल्पनाओं के साथ नवीन विषय, विचार, शैलियाँ, प्रयुक्त होती गई और साहित्य का क्षेत्र और भी बढ़ गया। साथ ही मनुष्य अपनी बुद्धि के

बल पर अपना विकास करने लगा। विज्ञान के सहारे उसने अपने भौतिक जीवन में काफी उन्नति की, परन्तु भावनिक पक्ष अधिक उन्नति न कर सका। परिणामतः मानव अनेक मनोग्रंथियों का शिकार हो गया। उसकी मानसिक अस्वस्थता साहित्य में भी चित्रित हुई है।

मनुष्य के मन को प्रस्थापित करना मुश्किल है। मनुष्य के मन की जटिलता को उजागर करने का अनेक साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिकों ने प्रयास किये हैं। इनमें प्रमुख हैं - फ्रायड़, एड्लर, युंग आदि। अन्य मनोवैज्ञानिकों की अपेक्षा फ्रायड़ को अधिक महत्त्व दिया गया है, क्योंकि फ्रायड़ ने सर्व प्रथम मन को विश्लेषित किया है। फ्रायड़ के सिद्धान्तों के कारण मनुष्य के मन की अनेक सतहें उजागर हुईं। मन को समझने में आसानी होने लगी। मनोविज्ञान के सहारे मनुष्य की प्रवृत्तियाँ भी जानी जाने लगी है। इन मनोवृत्तियों पर किन परिस्थितियों का कैसा प्रभाव होता है, इन प्रभावों के उसकी मानसिकता कैसी होती है। इन सब क्रियाओं का वर्णन मनोविज्ञान करता है। मनोविज्ञान के सहारे मनुष्य का व्यक्तित्व समझा जा सकता है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रगति के साथ मनोवैज्ञानिक जटिलता भी बढ़ गयी। मनुष्य जितनी विज्ञान में प्रगति कर रहा है उतनी प्रगति उसकी मानसिक क्षेत्र में नहीं हो रही। दिन-प्रति-दिन उसकी मानसिकता बिगड़ती जा रही है। परिणामतः व्यक्ति अनेक मानसिक विकृतियों से ग्रस्त होता जा रहा है। यही मानसिकता साहित्य में भी उतर आयी है। मनुष्य की विकृतियाँ साहित्य उजागर कर रहा है। आधुनिक साहित्य में महानगरीय जीवन, महानगरीय समस्याएँ, शहरों में बढ़ती हिंसा, बेकारी, सामाजिक तणाव, सांप्रदायिकता का बढ़ावा आदि चित्रित हो रहा है।

रचना को समझने के लिए लेखक के व्यक्तित्व को समझना चाहिए, क्योंकि लेखक अपने अनुभव, विचार आदि को अपनी कृतियों में निहित करता है। प्रस्तुत उपन्यास "मैं और मैं" मृदुला गर्ग के द्वारा लिखित उनका निहायत आत्मकेंद्रित पात्रों वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव भी प्रस्तुत किये है। लेखिका पर जैनेंद्र तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का काफी प्रभाव है। मृदुला जी का सारा साहित्य मनोवैज्ञानिकता पर आधारित है। मृदुला जी जैनेंद्र को गुरु-बन्धू मानती है।

मृदुला जी नारी मन की गुत्थियाँ सुलझाने में सफल रही है। अपने साहित्य में उन्होंने अधिक तर नारी समस्याएँ चित्रित की है। इनमें देहातों से लेकर आधुनिक युग की नारी के चित्रण के साथ उसकी मानसिकता भी चित्रित की है। प्रत्येक कहानी, उपन्यास में उन्होंने नारी की एक विशेषता प्रस्तुत की है। आधुनिक नारी जो शिक्षित, बुद्धिवादी है वह भावनाओं से पूर्ण नहीं है, वह अपने स्वतन्त्र अस्तित्व और अपने व्यक्तित्व तथा आत्म-विश्वास की खोज जारी रखें हुए है। इस संघर्ष में उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मृदुला जी ने अपने साहित्य में अपने जीवन अनुभव भी चित्रित किये है। इन जीवन अनुभवों के प्रमाण है - "अनित्य" और "मैं और मैं"। मृदूला जी को बचपन से वैचारिक स्वातन्त्र्य होने के कारण उनका अलग व्यक्तिमत्व बना है। उनके उपन्यास तथा कहानी साहित्य की नायिकाएँ स्वतन्त्र व्यक्तित्व की चित्रित हुई हैं।

प्रस्तुत उपन्यास "मैं और मैं" मृदुला जी के अन्य बहुचर्चित उपन्यासों में से एक है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने अपने जीवन के भी अनुभव प्रस्तुत किये है। इस उपन्यास के बारे में एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने अपने विचार प्रकट किये हैं। उनका कहना है कि "मैं और मैं" दोहरे दोहन और शोषण

की कथा जरूर है पर उसके दोनों पात्रों के बीच एक बहुत बड़ा अन्तर है। कौशल का किया शोषण योजनाबद्ध है। इसमें हिचक, अपराधबोध या पश्चाताप नहीं है। वह खुद को पीड़ित, वंचित और समाज का शिकार मानता है। उसकी मान्यता है कि क्योंकि समाज ने उसका शोषण किया है, इसलिए उसे अधिकार है कि जिस किसी का, जैसे चाहे, शोषण कर ले, दरअसल उसे अपने शोषण करने के तरीकों पर गर्व है।"[१] इसी तरह माधवी के व्यक्तित्व को भी उजागर करती है कि - "माधवी का किया शोषण सुनियोजित और सायास नहीं है। वह अहंकार और स्वार्थ से पैदा होता है और धीरे-धीरे सान चढ़ता है। ...वह लेखकीय उपलब्धि को सर्वोपरि मान बैठती है और उसके लिए मानवीय संबंधो का इस्तेमालल करने लगती है।"[२]

लेखिका कौशल और माधवी को वर्ग के प्रतिनिधि नहीं मानती, प्रतिनिधि मानती है अधिकारबोध और अपराध बोध के। इसी के आधार पर कौशल तथा माधवी का चित्रण हुआ है। सम्पूर्ण उपन्यास में कौशल माधवी का मानसिक तथा आर्थिक शोषण करता है, तो माधवी अपने अपराधबोध की भावना के कारण हुए मानसिक द्वंद्व से अपने लेखन के जरिए मुक्त होने के स्वप्न देखती है।

प्रस्तुत उपन्यास के प्रमुख दो पात्र माधवी और कौशल का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के सहारे विश्लेषण करने पर कह सकते है कि माधवी अपने अहम् के कारण कौशल के जाल में फँसती है तो कौशल विभक्त मानसिकता (Schizophrenia) के व्यक्तित्व में चित्रित हुआ है।

---

१. मृदुला गर्ग से दिनेश द्विवेदी का साक्षात्कार, "शहर के नाम" कहानीसंग्रह में संकलित पृ.१०५

२. — वही — पृ.१०५, १०६

उपन्यास के प्रारंभ में मन में उत्पन्न हुए प्रश्नों के उत्तर यहाँ प्रस्तुत किये हैं -

मनुष्य सामान्यतः स्वस्थ होता है। उसकी मानसिकता पर सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक परिस्थितियों की अनुकूलता - प्रतिकुलता के प्रभाव के कारण उसकी मानसिकता बनती है। परिस्थितियों की अनुकूलता से उसका व्यक्तित्व बनता है, उसमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वह अपने जीवन में सफल व्यक्ति बनता है। परिस्थितियों की प्रतिकूलता व्यक्तित्व बनाती है और बिगड़ती भी है। प्रतिकूल परिस्थिति होने पर भी जो व्यक्ति अपना लक्ष्य पाता है, उसका व्यक्तित्व अन्य व्यक्तियों से हटकर होता है। परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने हारने वाला व्यक्ति जिन्दगी में अपना लक्ष्य नहीं पा सकता। असफलता के कारण वह कुंठित बनता है। इस कुंठा से मुक्ति न मिलने पर वह अनेक मनोग्रंथियों से ग्रस्त होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में माधवी उच्चवर्गीय है। जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होने के कारण उसमें आत्म-विश्वास है। वैचारिक, आर्थिक तथा परिवार की ओर से भी स्वतन्त्रता होने के कारण उसका अपना व्यक्तित्व है। वह अपने निर्णय स्वयं लेती है। विचारों और आर्थिक कारणों के लिए उसे किसी पर अवलंबित नहीं रहना पड़ता। माधवी के विपरित कौशल की मानसिकता है। उसे बचपन से ही अपने अस्तित्व के लिए उसे संघर्ष करना पडा था। उसकी कोई इच्छा-आकांक्षा पूरी नहीं हुई थी। समाज द्वारा उपेक्षा, नफरत मिलने के कारण वह भी समाज से नफरत करता है। अपनी हर नाकाम कोशिश के लिए समाज को जिम्मेदार मानता है। पारिवारिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन के अभाव के कारण वह अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है। जीवन में असफलता ही मिलने के कारण वह कुंठित व्यक्तित्व बनता है और अनेक मनोग्रंथियों से ग्रस्त होता है।

मनुष्य का स्वभाव होता है कि जो चीज उसके पास नहीं है, वही चीज वह चाहता है। इसके लिए वह किसी भी मार्ग का अवलंब कर सकता है। वह उचित-अनुचित का ध्यान नहीं रखता। उस अप्राप्य वस्तु के लिए कोई भी कार्य कर सकता है, चाहे वह बुरा हो या अच्छा। इस अप्राप्य वस्तु को पाने में उसे असफलता मिलती है तो वह मानसिक द्वंद्व से घिर जाता है। मानसिक द्वंद्वावस्था के कारण वह अपनी मानसिक शांति खो देता है। मानसिक एकात्मता भंग हो जाने के कारण उसका व्यक्तित्व भी भंग होता है वह अनेक मनोग्रंथियों का शिकार होता है। यहीं मनोग्रंथियाँ विकृत रुप भी धारण कर सकती है। परिणामतः व्यक्ति विकृतियों का शिकार होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में कौशल मानसिक विकृतियों को प्रकट करता है। वह कामान्ध है। सन १९४७ के साम्प्रदायिक दंगों के दरम्यान वह एक मुस्लिम लड़की की जान बचाता है और कुछ दिन पश्चात अपने प्रेम का इजहार करता है, परन्तु वह लड़की कोई भी कार्य पूरा करने का वचन देती है पर इश्क के बारे में असमर्थता प्रकट करती है। इस कारण वह अपने साथियों को सलमा के छिपने की जगह बताता है। इसके पश्चात सलमा की की गई अवस्था याद कर के भी वह कै करता है। माधवी को भी वह अपनी प्रेमिका मानने लगता है। माधवी से भी अपने प्रेम का इजहार करता है, माधवी के फटकारने पर भी वह मानता नहीं।

कौशल की एक और विकृति है कि वह हरदम माधवी के पीछे रहता है। एक जासूस की तरह उसका पीछा करता है। उसे बार-बार फोन करता है। टेलिफोन देखते ही वह अपने आप को रोक नहीं पाता। राजेश्वर मिश्र का कथन - "जो आदमी कामलिप्सा से मरा जा रहा हो, उसे पैसे देकर नहीं बहलाया जा सकता।" स्पष्ट करता है कि कौशल विकृत व्यक्ति है। कौशल के चरित्र से विकृत मनोवृत्ति स्पष्ट होती है।

अहम् मनुष्य की स्वाभाविक शक्ति है। अहम् को मनोविज्ञान ने भी अधिक महत्त्व दिया है। अहम् के कारण ही मनुष्य अपने जीवन में आगे बढ़ता है। मनुष्य अपने हर कार्य में अपने आत्म को ही प्रकट करता है। मनुष्य की यह अहम् भावना बलवान होती है। इसी अहम् के कारण मनुष्य के मन में "मैं पन" (I-ness) की भावना जागृत होती है। मनुष्य का अहम् अपने अस्तित्व तथा सुरक्षा के लिए सदैव चेतन रहता है। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए उसपर अनेक आघात होते हैं। इन आघातों के कारण मनुष्य की अहम् की भावना को ठेस पहुँचती है। इन आघातों को सहकर व्यक्ति अपना अस्तित्व कायम रख सकता है तो उसका अहम् और भी बढ़ता है। परन्तु इन आघातों के कारण उसकी मानसिक एकात्मकता भंग हो सकती है और परिणामतः वह खंड़ित व्यक्तित्व बन जाता है अथवा अनेक विकृतियों से घिरता है।

प्रस्तुत उपन्यास में माधवी तथा कौशल का अहम् चित्रित हुआ है। माधवी अपनी न्यायबुद्धि तथा लेखकीय उपलब्धि के अहम् के कारण कौशल के जाल में फँसती है। कौशल उसके लेखकीय अहम् का लाभ उठाता है और अपना स्वार्थ पूरा करता है। इसी अहम् के कारण वह कौशल के जाल में फँसती है और उपन्यास के अन्त तक आते-आते अपनी लेखन क्षमता भी खो देती है। अमीर होने तथा निम्नवर्ग के प्रति अपराधबोध के कारण वह समाज की असमानता के लिए अपने-आप को ही जिम्मेदार मानती है। माधवी की इसी भावना का लाभ कौशल उठाता है। उपन्यास के लिए कौशल अनिवार्य प्रतीत होने लगता है। कौशल के कारण उसका परिवार भी अस्वस्थ होता है। अन्त में कौशल की असलियत जानने पर उसका अहम् ही उसे कौशल के जाल से छुड़ाने के लिए मदद करता है।

माधवी के विपरित कौशल की स्थिति है। कौशल अपने बारे में झूठा अहम् रखता है। उसकी कोई रचना प्रकाशित न होने पर भी अपने आप को "जीनियस" तथा "उच्चतम कोटि का साहित्यकार" मानता है। माधवी उसके जाल में फँसती देखकर अपने आप को "शब्दों को जादूगर" कहता है। अपने प्रति उसके मन में उच्चता की भावना इतनी अधिक है कि जर्मन चित्रकारों के चित्र में वह अपनी ओर से सुझाव देता है। उसे अपने झूठ बोलने पर भी अहम् है। परन्तु यही झूठा अहम् उसके व्यक्तित्व को बिखेर देता है।

खंड़ित व्यक्तित्व मनुष्य के जीवन की असामान्य अवस्था है। यह एक मानसिक विकृति है। इस अवस्था के लिए विभाजित (Dissociative) विघटित (Disintegrated), विभक्त (Divided), विस्थापित (Displaced) तथा विभक्त मनस्कता (Schizophrenia) आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। आत्मप्रकटीकरण मनुष्य की सहजजात प्रवृत्ति है। अपने आत्मकेंद्रित, स्वार्थी बन जाने के कारण उसका अपने परिवेश तथा समाज से संघर्ष होता है। इसमें उसकी अनेक इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, स्वप्नों का दमन होता है। इन दमित इच्छाओं के कारण उसके मन में संघर्ष आरंभ होता है। मानसिक अशांति का परिणाम उसके व्यवहार पर भी होता है।

व्यक्तित्व खंड़ित होने के लिए मनुष्य की अहम् भावना भी अधिक जिम्मेदार होती है। अपने प्रति की उच्चता की भावना उसे दूसरे लोगों से अलग करती है। इसी भावना के कारण वह अन्य व्यक्तियों को नगन्य मानता है। उसके अहम् पर चोट पहूँचने के कारण उसका अहम् आहत् होता है। अहम् को चोट पहूँचानेवाले के प्रति वह अपराधभावना से जल उठता है। इस प्रतिशोध लेने की भावना के कारण वह अस्वस्थ होता है। इसमें सफलता मिलने पर उसकी प्रतिशोध की भावना शांत हो जाती है, परन्तु इसमें असफलता मिलने के कारण

वह अनेक मनोग्रंथियों का शिकार होता है और परिणामतः खंड़ित हो जाता है।

व्यक्तित्व खंड़ित होने के लिए "दमन" यह मानसिक क्रिया भी जिम्मेदार होती है। जीवन की मनुष्य को कई बार मन की इच्छाओं, आकांक्षाओं का दमन करना पडता है। कभी-कभी ये दमित इच्छाएँ उग्र तथा विस्फोटक रुप धारण करती है। इस वजह से मनुष्य का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और परिणामतः वह विभक्त मानसिकता का शिकार हो जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास "मैं और मैं" मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें कौशल खंड़ित व्यक्तित्व के रुप में चित्रित हुआ है। कौशल अपने आप को "जीनियस" समझता है। यह उसका भ्रम है। माधवी के सम्मुख तथा बाद में विकृत विचारों का तालमेल नहीं रख पाता। अपने प्रति की उच्चता की भावना के कारण वह अन्य व्यक्तियों को नगन्य समझता है। माधवी के सहारे अपने जीवन की सभी दमित इच्छाएँ वह पूरी होती देखता है और एक जोंक की तरह माधवी के परिवार से चिपक जाता है। वह माधवी के बारे में गलत धारणाएँ बनाता है। उसी तरह वह झूठ-पर-झूठ बोलता जाता है और अन्त में अपने परिवेश के साथ तादाम्य नहीं रख पाता। माधवी का एक छोटा-सा झूठ उसे परास्त कर देता है। अपनी योजना के अनुसार वह माधवी से रुपये निकलवाता रहता है, परन्तु माधवी के एक ही कथन से उसकी पूरी योजना नाकामयाब होती है। वह यथार्थ या कल्पनाविश्व में फँस जाता है। क्या यथार्थ? क्या फंतासी है वह समझ नही पाता। अन्त में वह विभक्त मानसिकता में रहता है और फंतासी के जाल में रंगीन सपने बूनने लगता है।

निष्कर्षतः यही कह सकते हैं कि मनुष्य अपने ही अहम् का शिकार होता है। मृदुला गर्ग द्वारा लिखित यह उपन्यास मनुष्य की अनेक प्रवृत्तियों के

साथ उसके अहम् को भी चित्रित करता है। अहम् के अत्याधिक होने के कारण मनुष्य की मानसिक अवस्था तथा समस्याएँ भी चित्रित की है। प्रस्तुत उपन्यास के विवेचन के अनुसार कह सकते हैं कि उपन्यास का शीर्षक "मैं और मैं" यथार्थ है। इसमें मनुष्य के दोहरे दोहन और शोषण को चित्रित करने में लेखिका सफल हुई हैं।

<u>अनुसंधान की उपलब्धियाँ</u> -

१. प्रस्तुत उपन्यास के विश्लेषण से मानव-जीवन की अनेक सतहों को उजागर किया है।

२. मनुष्य की मानसिकता का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है।

३. व्यक्तित्व खंड़ित बनने के कारणों को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर सफल प्रस्तुति दी गई है।

४. महानगरीय जीवन उनकी मानसिकता तथा समस्याओं को प्रस्तुति मिली है।

<u>अनुसंधान की नई दिशाएँ</u> -

मृदुला जी के इस उपन्यास पर निम्न दिशाओं में गहराई से अनुसंधान किया जा सकता है -

१. "मैं और मैं" उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता।

२. "मैं और मै" उपन्यास में चित्रित मानसिकता।

******

Let knowledge grow From More to More
And thus be human life enriched..

-o-o-o-o-o-